e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 11, November 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.521

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 11, November 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0711120

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

राजा रवि वर्मा के चित्रों में प्रयुक्त तकनीक

Harphool Sharma

Assistant Professor (Vidya Sambal Yojana), Fine Arts and Painting, Government Girls College, Pali, Rajasthan, India

हरफूल शर्मा

सहायक आचार्य (विद्या संबल योजना), फाइन आर्ट्स एंड पेंटिंग,राजकीय कन्या महाविद्यालय ,पाली ,राजस्थान

सारांश: रजा रवि वर्मा एक भारतीय चित्रकार और कलाकार थे। उनकी कृतियाँ यूरोपीय अकादमिक कला और विशुद्ध भारतीय संवेदनशीलता और प्रतीकात्मकता के सम्मिश्रण के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक हैं । विशेष रूप से वे अपने चित्रों के किफायती लिथोग्राफ जनता के लिए उपलब्ध कराने के लिए उल्लेखनीय थे, जिसने एक चित्रकार और सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में उनकी पहुंच और प्रभाव को काफी बढ़ाया। उनके लिथोग्राफ ने ललित कलाओं के साथ आम लोगों की भागीदारी को बढ़ाया और आम लोगों के बीच कलात्मक स्वाद को परिभाषित किया। इसके अलावा हिंदू देवी-देवताओं के उनके धार्मिक चित्रण और भारतीय महाकाव्य कविता और पुराणों के कार्यों को गहन प्रशंसा मिली है ।राजा रवि वर्मा ने अपनी उत्कृष्ट कलाकृतियों के माध्यम से भारतीय ऐतिहासिक तथा पौराणिक अनुभूतियों को जीवंत बनाया । उन्होंने तेल रंगों और यूरोपीय तकनीकों का उपयोग कर भारतीय धार्मिक और पौराणिक कथाओं को चित्रों में प्रस्तुत किया। उनकी कला ने न केवल भारतीय जनमानस को प्रभावित किया, बल्कि यह आधुनिक भारतीय कला के विकास में मील का पत्थर साबित हुई।

प्रस्तावना

भारतीय चित्रकला के क्षितिज पर राजा रवि वर्मा का उदय ऐसे समय में हुआ था जब एशिया महाद्वीप के प्राय सभी भागों की कला परंपरानाजुक दोर से गुजर रही थी । ब्रितानी शासको की उपेक्षा तथा अन्य ऐतिहासिक एवं राजनीतिक कारणों से राजघराने में पल्लवित तथा विकसित लघु चित्र कला प्राय: दम तोड़ चुकी थी । चारों ओर पश्चमी प्रभाव की एक मिश्रित शैली का प्रभुत्व बढ़ रहा था । श्रेष्ठ भारतीय कला परंपरा के इस ह्रासोमुखकाल में कला- दक्ष परिश्रमशील- चित्रकार राजा रवि वर्मा ने भारतीय धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित चित्र रचनाएं बनाकर दर्शकों व कला प्रेमियों पर अपनी आकर्षक एवं मनोरम कला की गहरी छाप छोड़ी । उन्होंने प्राचीन केरल के किलीमानूर राजघराने की सांस्कृतिक एवं कलात्मक अभिरुचि को विकसित किया तथाअपनी अभिराम रंग योजना के माध्यम से अनेक जीवंत चित्रों का सृजन किया । उन्होंने तेल रंगों में अपने निजी तकनीक के साथ काम करने वाले प्रथम भारतीय चित्रकार के रूप में ख्याति अर्जित की एवं एक उल्लेखनीय सफलता का सेहरा अपने सिर पर बंधवाया । राजा रवि वर्मा ने यद्यपि किसी कला महाविद्यालय अथवा संस्थान में कला की विधिव्रत शिक्षा प्राप्त नहीं की थी तथापि अपनी अनवरत कला साधना, अनथक लगन एवं विकसित कला दृष्टि के कारण अपने क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की । उनकी ग्राह्य शक्ति अत्यंत प्रबल थी ।

रजा रवि वर्मा की कला भारतीय संस्कृति और परंपराओं की सजीव झलक प्रस्तुत करती है। उनके चित्रों में पारंपरिक भारतीय तत्त्व न केवल धार्मिक और पौराणिक कथाओं तक सीमित रहे, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज और स्त्री की छवि को भी उभारा। उनकी कला में भारतीयता और आधुनिकता का अद्वितीय संगम है, जिसने भारतीय चित्रकला को विश्व मंच पर विशेष स्थान दिलाया।

मुख्य शब्द: तकनीक,परिप्रेक्ष्य,पारम्परिक,छायाप्रकाश,त्रिआयामी,तत्त्व,पौराणिक,महारत,यथार्थवादी,छायांकन,हासिल, लिथोग्राफिक,संयोजन

I. साहित्यावलोकन

डॉ. प्रेमचंद गोस्वामी द्वारा लिखित "आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ", स्तक का अध्ययन किया जिसमे भारतीय आधुनिक चित्रकारों जीवन-चर्या,कला प्रक्रिया,योगदान एवं उपलब्धियों से परिचित करवाती है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

डॉ.रीता प्रताप द्वारा लिखित "भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास" पुस्तक का अध्ययन किया जो भारतीय चित्रकला मूर्तिकला एवं मंदिर कला पर विवरण प्रस्तुत करती है। डॉक्टर आर. ए. अग्रवाल द्वारा लिखी गई "कला विलास- भारतीय चित्रकला का विवेचन" पुस्तक का अध्ययन किया, इस पुस्तक में भारतीय चित्रकला एवं विभिन्न चित्र शैलियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। डॉ.अविनाश बहादुर वर्मा द्वारा रचित "भारतीय चित्रकला का इतिहास" पुस्तक का अध्ययन किया, जो भारतीय कला इतिहास में शैलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करती है। डॉ.लोकेश चंद्र शर्मा द्वारा लिखित "भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास" पुस्तक का अध्ययन किया जिसमें भारतीय चित्र शैलियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।.जगदीश चंद्रिकेश द्वारा लिखित पुस्तक "रवि" का अध्ययन किया जिसमे राजा रवि वर्मा की जीवन-चर्या, कला प्रक्रिया, योगदान एवं उपलब्धियों से परिचित करवाती है।

II. परिचय

राजा रवि वर्मा (जन्म 29 अप्रैल, 1848 - मृत्यु 2 अक्टूबर, 1906) किलिमानूर पैलेस त्रिवेंद्रम के पास त्रावणकोर रियासत, ब्रिटिश भारत (अब तिरुवनंतपुरम, केरल)एक भारतीय चित्रकार थे जिन्हें हिंदू पौराणिक विषयवस्तु को यूरोपीय यथार्थवादी ऐतिहासिक चित्रकला शैली के साथ जोड़ने के लिए जाना जाता था। वे तेल पेंट का उपयोग करने वाले और अपने काम के लिथोग्राफिक पुनरुत्पादन की कला में महारत हासिल करने वाले पहले भारतीय कलाकारों में से एक थे। हिंदू पौराणिक कथाओं की घटनाओं के अलावा वर्मा ने भारत में भारतीयों और ब्रिटिशों दोनों के कई चित्र बनाए।

राजा रवि वर्मा का जन्म त्रावणकोर राज्य के एक कुलीन परिवार में हुआ था। उन्होंने कम उम्र से ही चित्रकारी में रुचि दिखाई और उनके चाचा राजा राजा वर्मा ने महल की दीवारों पर चित्रकारी के उनके जुनून को देखते हुए उन्हें पेंटिंग की पहली प्राथमिक शिक्षा दी। जब वर्मा 14 वर्ष के थे तब त्रावणकोर के तत्कालीन शासक महाराजा अयिलयम थिरुनल उनके कलात्मक करियर के संरक्षक बन गए। जल्द ही शाही चित्रकार राम स्वामी नायडू ने उन्हें जलरंगों से चित्रकारी सिखाना शुरू कर दिया। तीन साल बाद वर्मा ने डेनिश मूल के ब्रिटिश कलाकार थियोडोर जेन्सन के साथ तेल चित्रकला का अध्ययन करना शुरू किया।

वर्मा परिप्रेक्ष्य और रचना की पश्चिमी तकनीकों का उपयोग करने वाले और उन्हें भारतीय विषयों, शैलियों और थीमों के अनुकूल बनाने वाले पहले भारतीय थे । उन्होंने पेंटिंग के लिए 1873 में गवर्नर का स्वर्ण पदक मिला। वह भारतीय कुलीन वर्ग और भारत में यूरोपीय लोगों के बीच एक बहुत ही लोकप्रिय कलाकार बन गए जिन्होंने उन्हें अपने चित्र बनाने का काम सौंपा।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय पौराणिक कथाओं के विषयों को अधिक चित्रित किया। महाकाव्यों और पुराणों में हिंदू देवी-देवताओं और पात्रों के उनके चित्रण भारतीय संस्कृति में उनके लीन होने को दर्शाते हैं । उनके चित्रों में संकट में हरिश्चंद्र , जटायु वध और समुद्र पर विजय प्राप्त करते श्री राम शामिल हैं जिन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं के नाटकीय क्षणों को कैद किया है। भारतीय महिलाओं के उनके चित्रण ने इतनी प्रशंसा बटोरी कि एक सुंदर महिला को अक्सर इस तरह से वर्णित किया जाता था कि "वह कैनवास से बाहर निकली हो।"

राजा रवि वर्मा ने भारतीय कला में एक नए आंदोलन की शुरुआत करने के लिए पश्चिमी यथार्थवाद को अपनाया । 1894 में उन्होंने एक लिथोग्राफिक प्रेस की स्थापना की ताकि ओलियोग्राफ के रूप में उनकी पेंटिंग की प्रतियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सके ताकि आम लोग उन्हें खरीद सकें। इस नवाचार के परिणामस्वरूप उनकी छवियों की जबरदस्त लोकप्रियता हुई जो उसके बाद लोकप्रिय भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन गईं।

राजा रवि वर्मा की बाद के कलाकारों द्वारा कड़ी आलोचना की गई जिन्होंने उनके काम की विषय-वस्तु को केवल सतही तौर पर भारतीय माना क्योंकि पौराणिक भारतीय विषयों को दर्शाने के बावजूद इसमें चित्रकला की पश्चिमी शैलियों की नकल की गई थी। यह दृष्टिकोण कला के निर्माण में सहायक था।बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट (या बंगाल स्कूल) जिसके सदस्यों ने आधुनिकतावादी संवेदनशीलता के साथ प्राचीन भारतीय कलात्मक परंपराओं का अन्वेषण किया।

राजा रवि वर्मा के काम को कुछ लोगों द्वारा "कैलेंडर कला" कहकर खारिज किए जाने के बावजूद उनके काम में रुचि लगातार बनी हुई है। उदाहरण के लिए 1997 में "द बेगम्स बाथ" एक भारतीय कलाकार के लिए रिकॉर्ड कीमत पर बिकी। द महाराष्ट्रियन लेडी , शकुंतला , द मिल्कमेड , एक्सपेक्टेशन और प्लीजिंग जैसी कृतियाँ वर्मा की सुंदरता और शालीनता की विशिष्ट भावना को प्रदर्शित करती हैं।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

III. चित्रण तकनीकें

1. तेल रंगों का उपयोग:

राजा रवि वर्मा ने अपनी कृतियों में मुख्य रूप से तेल रंगों का प्रयोग किया। तेल रंग (Oil Paints) वह माध्यम है जिसमें रंगों को एक तेलीय माध्यम जैसे लिनसीड ऑयल, के साथ मिलाकर कैनवास पर लगाया जाता है। यह माध्यम चित्रकला में गहराई, चमक और स्थायित्व प्रदान करता है।तेल रंगों का उपयोग यूरोपीय चित्रकला में 15वीं सदी से होता आ रहा था लेकिन भारत में इसका व्यापक उपयोग राजा रवि वर्मा के प्रयासों के बाद ही प्रारंभ हुआ। उन्होंने इस माध्यम का उपयोग कर भारतीय परंपरागत विषयों को पश्चिमी यथार्थवादी शैली में प्रस्तुत किया। राजा रवि वर्मा ने तेल रंगों का प्रयोग कर भारतीय देवी-देवताओं और पौराणिक चरित्रों को चित्रित किया। उन्होंने इस माध्यम का उपयोग करके अपनी कला को न केवल भारतीय संदर्भ में प्रभावशाली बनाया बल्कि उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई।उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए तेल रंग उनके चित्रों को एक जीवंतता और यथार्थवादी स्पर्श प्रदान करते हैं।

2. यथार्थवादी शैली:

राजा रवि वर्मा भारतीय कला के इतिहास में एक ऐसे अद्वितीय कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं जिन्होंने अपनी यथार्थवादी शैली और अद्वितीय तकनीक के माध्यम से भारतीय चित्रकला को एक नई दिशा दी। उनकी कला न केवल भारतीय पौराणिक कथाओं और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाती है, बल्कि उन्होंने यूरोपीय कला के तत्वों को भारतीय संदर्भ में खूबसूरती से आत्मसात किया। राजा रवि वर्मा का योगदान भारतीय चित्रकला में यथार्थवाद को स्थापित करने में अहम भूमिका निभाता है।

उन्होंने भारतीय विषयों को पेंट करने के लिए यूरोपीय तकनीकों जैसे परिप्रेक्ष्य, छायांकन और रंगों की गहराई का उपयोग किया। उनकी चित्रकला में चेहरे की अभिव्यक्ति, वस्त्रों की सिलवटें, और प्रकृति के विवरण इतने सजीव होते थे कि वे चित्र देखने वाले को वास्तविकता का अहसास कराते थे। उनके चित्रों में मानव आकृतियाँ और भावनाएँ अत्यंत यथार्थवादी और जीवंत होती थीं।

भारतीय कला में देवी-देवताओं को अक्सर प्रतीकात्मक और अलंकरणीय रूप में चित्रित किया जाता था। राजा रवि वर्मा ने इन्हें मानव रूप में चित्रित किया जो पश्चिमी यथार्थवाद से प्रेरित था। उनकी पेंटिंग्स में देवी लक्ष्मी, सरस्वती और भगवान कृष्ण को भारतीय परिधान और आभूषणों में यथार्थवादी ढंग से दर्शाया गया है। इस दृष्टिकोण ने भारतीय पौराणिक कथाओं को आम जनता के लिए अधिक सुलभ और प्रासंगिक बनाया।

वर्मा ने पश्चिमी शैली की तकनीकों को अपनी कला में अपनाया जिसमें विशेष रूप से तेल चित्रकला और यथार्थवादी रचना शामिल थी। उन्होंने रंगों के मिश्रण और प्रकाश-छाया के प्रयोग से अपने चित्रों को जीवंतता प्रदान की। उनके चित्रों में अक्सर बारीकियों पर विशेष ध्यान दिया गया जो उन्हें उस समय के अन्य भारतीय कलाकारों से अलग बनाता है।उनकी पेंटिंग्स ने भारतीय कलाकारों को परंपरागत शैलियों से बाहर निकलकर नए दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने भारतीय कला को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई। उनकी यथार्थवादी शैली ने भारतीय कला में एक नई क्रांति की शुरुआत की

हालांकि राजा रवि वर्मा को भारतीय कला में उनके योगदान के लिए सराहा गया, लेकिन उनकी कला को लेकर आलोचनाएँ भी हुईं। कुछ परंपरागत कलाकारों और विद्वानों ने उनकी कला को "अति-यूरोपीय" कहा और यह तर्क दिया कि उन्होंने भारतीय कला की मौलिकता को कम किया। फिर भी उनकी कृतियों ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित किया और कला को आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाया।

उनकी यथार्थवादी शैली भारतीय पौराणिक कथाओं का चित्रण और यूरोपीय तकनीकों का उपयोग उनकी कला को विशेष और अद्वितीय बनाता है। उनकी कला भारतीय संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक है जो आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को भारतीय कला के गौरवशाली अतीत की याद दिलाती रहेगी।

3. पश्चिमी परिप्रेक्ष्य:

राजा रवि वर्मा ने पश्चिमी परिप्रेक्ष्य का उपयोग कर गहराई और त्रिविमीयता (3D effect) को अपने चित्रों में उभारा।पश्चिमी परिप्रेक्ष्य का यह उपयोग उनके चित्रों को अधिक प्रभावी और जीवंत बनाता है। उदाहरण के लिए, "गजेंद्रमोक्ष" नामक चित्र में पानी, हाथी, और भगवान विष्णु के बीच का दृश्य गहराई और आंदोलन का प्रभाव उत्पन्न करता है।राजा रवि वर्मा के चित्रों में पश्चिमी परिप्रेक्ष्य का प्रभाव उनके समय से लेकर आज तक भारतीय कला को प्रेरित करता रहा है। उन्होंने भारतीय कला को न केवल पश्चिमी तकनीकों

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

से समृद्ध किया बल्कि इसे एक वैश्विक पहचान भी दिलाई। उनके चित्रों में परिप्रेक्ष्य, यथार्थवाद, और भावनात्मक गहराई का संयोजन भारतीय कला को आधुनिकता के साथ जोड़ने का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। राजा रवि वर्मा की यह उपलब्धि न केवल भारतीय कला के इतिहास में बल्कि वैश्विक कला जगत में भी अमूल्य है।

4. प्रकाश और छाया का उपयोग:

प्रकाश और छाया किसी भी चित्रकला के महत्वपूर्ण तत्व होते हैं जो चित्र को गहराई, यथार्थ और जीवन प्रदान करते हैं। राजा रवि वर्मा ने इन तत्वों का प्रयोग इस तरह से किया कि उनकी कृतियाँ सिर्फ चित्र न रहकर एक कहानी बन गईं। उन्होंने प्रकाश और छाया का उपयोग न केवल पात्रों के आकार और रूप को उभारने के लिए किया बल्कि उनके भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को भी व्यक्त किया।

राजा रवि वर्मा ने पश्चिमी कला शैली विशेष रूप से पुनर्जागरण काल के चित्रकारों से प्रेरणा ली। उन्होंने प्रकाश और छाया के उपयोग में 'चियारोस्कुरो' तकनीक का उपयोग किया जो चित्र में गहराई और त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए उनके चित्र 'शकुंतला' में प्रकृति का प्रकाश और पात्रों पर पड़ने वाली छाया का अद्भुत संतुलन है। यह संतुलन न केवल चित्र को यथार्थवादी बनाता है बल्कि दर्शकों को उस समय और स्थान पर ले जाता है।

राजा रवि वर्मा के चित्रों में प्रकाश और छाया का उपयोग पात्रों की भावनाओं और उनके आंतरिक संघर्षों को व्यक्त करने के लिए भी किया गया है। उनके प्रसिद्ध चित्र 'दमयंती और हंस' में दमयंती के चेहरे पर पड़ने वाले प्रकाश और छाया के माध्यम से उनके भावनात्मक स्थिति को व्यक्त किया गया है। चित्र में प्रकाश की मुलायमता और छाया की गहराई उनके मन की कोमलता और विचारशीलता को दर्शाती है।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय पौराणिक और धार्मिक कथाओं को अपनी कला के माध्यम से जीवंत किया। उन्होंने अपने चित्रों में देवताओं और पौराणिक पात्रों को इस प्रकार चित्रित किया कि वे साधारण मनुष्यों जैसे प्रतीत हों लेकिन उनके दिव्य गुणों को प्रकाश और छाया के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्यक्त किया।

राजा रवि वर्मा ने रामायण और महाभारत के कई दृश्यों को चित्रित किया। इनमें प्रकाश और छाया का उपयोग पात्रों की धार्मिकता, वीरता, और मानवीय कमजोरियों को दर्शाने के लिए किया गया। उनके चित्र 'अर्जुन और सुभद्रा' में सुभद्रा के चेहरे पर पड़ने वाले प्रकाश ने उनकी मासूमियत और सादगी को उभारा है जबकि अर्जुन के चेहरे पर छाया ने उनके गंभीर और विचारशील व्यक्तित्व को दर्शाया है।

राजा रवि वर्मा ने देवी लक्ष्मी, सरस्वती, और विष्णु जैसे देवताओं के चित्र बनाए जिनमें प्रकाश और छाया का उपयोग उनके दिव्य स्वरूप और शक्ति को उभारने के लिए किया गया। उनके चित्रों में प्रकाश की दिशा इस प्रकार तय की गई है कि पात्रों का मुखमंडल चमकता हुआ प्रतीत होता है जबकि उनके वस्त्र और अन्य सज्जा छाया में ढके रहते हैं। यह संतुलन चित्रों को दिव्यता और गरिमा प्रदान करता है।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय महिलाओं के सौंदर्य और उनकी विभिन्न भाव-भंगिमाओं को अपनी कला के माध्यम से चित्रित किया। उन्होंने महिलाओं के चेहरे और शरीर की आकृति को उभारने के लिए प्रकाश और छाया का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। उनके चित्र 'लेडी विद फ्रूट' और 'लेडी इन मूनलाइट' में प्रकाश और छाया का अद्भुत संतुलन देखा जा सकता है। इन चित्रों में प्रकाश ने महिला के चेहरे की भावनाओं को उभारा है जबकि छाया ने चित्र को एक रहस्यमय और आकर्षक रूप दिया है।

राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रों में प्रकृति और परिवेश का भी अद्वितीय चित्रण किया। उनके चित्रों में प्रकृति का प्रकाश पात्रों और दृश्य को गहराई प्रदान करता है। 'विलुप्त होती शकुंतला' चित्र में पेड़ों और पत्तियों के बीच से छनकर आने वाले प्रकाश ने दृश्य को जीवंत बनाया है।

राजा रवि वर्मा की चित्रकला में प्रकाश और छाया का उपयोग केवल तकनीकी कौशल का प्रमाण नहीं है बल्कि यह उनकी गहरी समझ और भारतीय कला के प्रति उनके समर्पण को भी दर्शाता है। उनकी कला ने भारतीय पौराणिक कथाओं और संस्कृति को एक नया दृष्टिकोण दिया और उन्हें यथार्थ और दिव्यता के अद्भुत संगम के रूप में प्रस्तुत किया। प्रकाश और छाया का ऐसा प्रभावशाली उपयोग भारतीय कला में एक मील का पत्थर है जो आज भी कला प्रेमियों और शोधकर्ताओं को प्रेरित करता है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

5. पारंपरिक भारतीय तत्व:

राजा रवि वर्मा भारतीय कला के महानतम चित्रकारों में से एक माने जाते हैं जिन्होंने पारंपरिक भारतीय तत्त्वों और पाश्चात्य शैली की तकनीकों के सम्मिश्रण से एक अनोखी कला शैली विकसित की। उनके चित्रों में भारतीय संस्कृति, परंपराएं और धार्मिक भावनाएं गहराई से प्रतिबिंबित होती हैं।

यद्यपि उनकी तकनीक पश्चिमी थी उन्होंने भारतीय परंपरा, संस्कृति और वेशभूषा को प्रमुखता दी। उनके चित्र भारतीय देवताओं, नायकों और पौराणिक कथाओं पर आधारित थे।

राजा रवि वर्मा के चित्रों का प्रमुख आकर्षण उनके द्वारा चित्रित हिंदू पौराणिक कथाएं और देवी-देवताओं के चित्र हैं। उन्होंने भारतीय महाकाव्यों जैसे **महाभारत** और **रामायण** से पात्र और घटनाएं अपने चित्रों का आधार बनाया। देवी लक्ष्मी के सौंदर्य और वैभव को चित्रित करते हुए उन्होंने कमल, धन, और जल जैसे पारंपरिक प्रतीकों का उपयोग किया। देवी सरस्वती को वीणा और पुस्तक के साथ ज्ञान की देवी के रूप में दर्शाया। उनके चित्रों में राधा-कृष्ण के प्रेम और भक्ति को पारंपरिक रूप से प्रस्तुत किया गया जिसमें वृंदावन का वातावरण और गोपियों की पृष्ठभूमि दिखाई देती है। भगवान शिव और पार्वती के चित्रों में हिमालय और कैलाश पर्वत का पारंपरिक संदर्भ मिलता है।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय महिलाओं की सुंदरता, शालीनता और पारंपरिक वेशभूषा को अभिव्यक्त करने में महारत हासिल की। उनके चित्रों में भारतीय स्त्री का हर रूप दिखता है जैसे देवी, नायिका, पत्नी, मां और साधारण महिला। उन्होंने अपने चित्रों में पारंपरिक साड़ी पहने हुए महिलाओं को चित्रित किया जिसमें क्षेत्रीय विविधताओं का समावेश था। भारतीय महिलाओं के पारंपरिक गहनों जैसे चूड़ियां, बिंदियां, नथ, और हार का बारीकी से चित्रण किया। उनके चित्रों में भारतीय महिलाओं की मुद्राओं और भावों में कोमलता, मातृत्व और नारीत्व झलकता है।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय लोककथाओं और ग्रामीण जीवन को भी अपने चित्रों का विषय बनाया। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं, किसानों और साधारण लोगों के जीवन को उनकी पारंपरिक वेशभूषा और दैनिक क्रियाओं के माध्यम से चित्रित किया। भारतीय त्योहारों और परंपराओं को उन्होंने अपने चित्रों में जीवंत बनाया जैसे दीपावली और होली।

प्रमुख चित्र और उनकी तकनीक का विश्लेषण:

शकुंतला

राजा रवि वर्मा की सबसे प्रसिद्ध और प्रशंसित पेंटिंग में से एक है 'शकुंतला'। इसमें महाभारत का एक दृश्य दिखाया गया है जिसमें शकुंतला पीछे देखते हुए अपने पैरों से कुछ उठाने का नाटक करती है। लेकिन वास्तव में वह अपने प्रेमी दुष्यंत को देखने की कोशिश कर रही थी। पेंटिंग की रचना बहुत परिष्कृत और साथ ही अभिव्यंजक है। शकुंतला बीच में है और उसने एक साधारण सुंदर साड़ी पहनी हुई है। उसके बालों को फूलों से सजाया गया है और पृष्ठभूमि हरियाली से भरी हुई है।

शकुंतला और उसकी सहेलियाँ, 1898

हंस दमयंती

'हंस दमयंती' राजा रवि वर्मा की एक और प्रसिद्ध पेंटिंग है। यह सरल, परिष्कृत, सुंदर और आंखों को सुकून देने वाली है। इसमें थोड़ा नाटक भी है।दमयंती ने खूबसूरती से मुद्रा बनाई है। उसकी शारीरिक भाषा सुंदर है और वह हंस की बात ध्यान से सुनती हुई प्रतीत होती है जो रेलिंग पर बैठा है। पेंटिंग में एक नरम स्वर है जिसमें नीले, गुलाबी और सुनहरे रंग के शेड हैं और यह सब मिलकर पेंटिंग और दृश्य को एक स्वप्न जैसा प्रभाव देता है।

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 11, November 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0711120

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

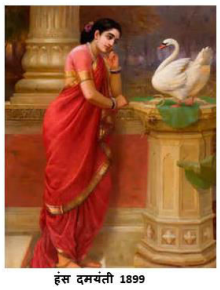

हंस दमयंती 1899

सावित्री

"सावित्री" भारतीय कलाकार राजा रवि वर्मा की एक पेंटिंग है जो भारतीय पौराणिक कथाओं के एक दृश्य को दर्शाती है। पेंटिंग में राजा अश्वपति और उनकी रानी मालती की बेटी सावित्री की कहानी दिखाई गई है जो एक राजकुमार सत्यवान से मिली और उससे प्यार करने लगी जो अपना राज्य खो चुका था और अपने पिता के साथ जंगल में लकड़हारे के रूप में रह रहा था। पेंटिंग उस क्षण को दर्शाती है जब व्रत रखने वाली सावित्री ने तर्क दिया और मृत्यु के देवता यम को सत्यवान की जान लेने से रोका। इसमें सावित्री को शक्तिशाली और दृढ़ मुद्रा में दर्शाया गया है जिसमें सत्यवान उसकी गोद में बैठा है। यम को अग्रभूमि में एक अलौकिक चरित्र के रूप में देखा जाता है जो दृश्य की पारलौकिक प्रकृति पर जोर देता है।

सावित्री 1898

यह पेंटिंग जीवंत रंगों के उपयोग और बारीकियों पर ध्यान देने के लिए जानी जाती है। राजा रवि वर्मा की पौराणिक पात्रों को जीवंत करने और उन्हें आम लोगों के लिए प्रासंगिक बनाने की क्षमता इस पेंटिंग में स्पष्ट है। इसे भारतीय कला की उत्कृष्ट कृति और भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व माना जाता है। सावित्री के चरित्र को अक्सर भक्ति, प्रेम और बलिदान के अवतार के रूप में चित्रित किया जाता है जो ऐसे मूल्य हैं जिन्हें भारतीय संस्कृति में अत्यधिक माना जाता है।

द्रौपदी वस्त्रहरण

राजा रवि वर्मा की यह पेंटिंग भारतीय महाकाव्य महाभारत के दृश्य को दर्शाती है जिसमें पांडवों की पत्नी द्रौपदी को कौरवों के दरबार में दुशासन द्वारा निर्वस्त्र कर दिया जाता है। पेंटिंग में द्रौपदी को संकट की स्थिति में दिखाया गया है क्योंकि वह दया की गुहार लगा रही है जबकि दुशासन उसे निर्वस्त्र करने के लिए आगे बढ़ता है। कहानी यह है कि एक दैवीय हस्तक्षेप हुआ और जैसे ही दुशासन ने उसे निर्वस्त्र किया, कपड़े प्रकट हुए, और वस्त्रहरण रुका। इस दृश्य को महाभारत की एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है और भारतीय कला और साहित्य में इसका व्यापक चित्रण किया गया है।

द्रौपदी वस्त्रहरण 1898

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

IV. तकनीक का ऐतिहासिक प्रभाव

1. भारतीय कला का पुनरुद्धार:
कला समीक्षकों की आलोचना के बाद भी यह है कहना युक्तिसंगत होगा कि राजा रवि वर्मा ने अपनी उत्कृष्ट कलाकृतियों के माध्यम से भारतीय पौराणिक अनुभूतियों को जीवंत बनाया। ब्रिटिश शासको के अनेक नियंत्रण के उपरांत भी उन्होंने भारतीय कला के पुनरुद्धार का प्रयास किया। राजा रवि वर्मा ने कला को नई दृष्टि प्रदान की। उन्होंने कला को सार्वजनिक होने की विशुद्ध भूमिका तैयार की। उन्होंने अपनी कला में मानवीय रंग शास्त्र के अनेक अध्याय जोड़े ।

2. मुद्रण प्रक्रिया का आरंभ:
राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रों की प्रिंटिंग शुरू की जिससे उनकी कला आम जनता तक पहुँची। 1894 में राजा रवि वर्मा ने अपने भाई राजा राजा वर्मा के साथ मिलकर "रवि वर्मा प्रेस" की स्थापना की। यह प्रेस मुंबई के नजदीक शुरू की गई थी। इस प्रेस के जरिए उन्होंने अपने चित्रों की प्रिंटिंग शुरू की, जो सस्ती और आसानी से उपलब्ध थीं। भारतीय पौराणिक पात्रों जैसे कि राम, कृष्ण, सीता, राधा, और देवी-देवताओं के चित्रों को हर वर्ग तक पहुंचाना। उनके प्रिंट इतने लोकप्रिय हुए कि भारतीय घरों में धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में जगह बनाने लगे।इससे पहले, चित्रकला केवल अभिजात वर्ग तक सीमित थी, लेकिन मुद्रण प्रक्रिया ने इसे आम जनता तक पहुंचाया।उनकी कला ने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को जनमानस के करीब लाने में मदद की। उन्होंने जर्मनी से लिथोग्राफी की तकनीक और उपकरण मंगवाए ताकि उनकी कला उच्च गुणवत्ता में छप सके। उनके चित्रों ने भारतीय पोस्टरों और कैलेंडर कला के विकास को प्रेरित किया। इससे भारतीय समाज में कला के प्रति रुचि बढ़ी।

3. सांस्कृतिक जागरूकता:
वि वर्मा ने महाभारत, रामायण, और अन्य भारतीय पौराणिक ग्रंथों के पात्रों और घटनाओं को जीवंत चित्रों के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने लक्ष्मी, सरस्वती, सीता, द्रौपदी, और अन्य देवी-देवताओं की छवियों को इस प्रकार चित्रित किया कि वे भारतीय जनता के लिए सुलभ और सजीव बन सकें। यह उनके चित्रों में भारतीय धर्म और पौराणिक कथाओं की सांस्कृतिक चेतना को दर्शाता है। **उनके चित्रों में भारतीय समाज की परंपराओं, रीति-रिवाजों और पहनावे को सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। वे भारतीय महिलाओं को पारंपरिक साड़ियों में चित्रित करते थे जिसमें उनकी गरिमा और शालीनता झलकती थी। उनके चित्र उस समय की भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनकी सुंदरता का सम्मानजनक चित्रण करते हैं।**

4. यूरोपीय कला का भारतीयकरण:
उन्होंने यूरोपीय तकनीकों को अपनाकर भारतीय कला को एक नई दिशा दी। रवि वर्मा ने पश्चिमी शैली की यथार्थवादी चित्रकला तकनीक को अपनाया और उसे भारतीय विषयों के साथ जोड़ा। यह भारत में कला के क्षेत्र में एक सांस्कृतिक जागरूकता लाने का प्रयास था, जिससे भारतीय चित्रकला को एक वैश्विक पहचान मिली।

V. उपसंहार

राजा रवि वर्मा भारतीय कला के महानतम चित्रकारों में से एक थे। उनके चित्र भारतीय संस्कृति और परंपरा को यूरोपीय कला तकनीकों के साथ अद्वितीय रूप से प्रस्तुत करते हैं। इस शोधपत्र में राजा रवि वर्मा द्वारा प्रयुक्त चित्रण तकनीकों, उनके प्रभावों और भारतीय कला पर उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह अध्ययन उनके चित्रों में निहित सौंदर्यशास्त्र और प्रतीकात्मकता पर भी प्रकाश डालता है।

सन्दर्भ

1.डॉ. प्रेमचंद गोस्वामी,आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर द्वितीय संस्करण 2006,पृष्ठ संख्या-9,12
2. डॉ.रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर चौदहवा संस्करण-2013 पृष्ठ संख्या 310,311,313,314
3. डॉ. आर. ए. अग्रवाल, कला विलास-भारतीय चित्रकला का विवेचन, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ. संस्करण-1995, पृष्ठ संख्या 192,193

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

4. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा,भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो,बरेली संस्करण-1995
पृष्ठ संख्या.281,282
5.डॉ. लोकेश चंद्र शर्मा.भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ.
संस्करण-1990 91, पृष्ठ संख्या.166
6.जगदीश चंद्रिकेश, रवि, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रक्षिक्षण परिषद्,नई दिल्ली, संस्करण-199, पृष्ठ संख्या. 88,89,90

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com